E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2025; 7(4): 184-191
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 21-02-2025
Accepted: 24-03-2025

डॉ. सावित्री सिंह परिहार
सह-प्राध्यापक (इतिहास), मानविकी एवं उदार कला संकाय, रबींद्रनाथ टैगोर यूनिवर्सिटी भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

ज्योति चौबीसा
पीएचडी स्कॉलर, मानविकी एवं उदार कला संकाय, रबींद्रनाथ टैगोर यूनिवर्सिटी भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. सावित्री सिंह परिहार
सह-प्राध्यापक (इतिहास), मानविकी एवं उदार कला संकाय, रबींद्रनाथ टैगोर यूनिवर्सिटी भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

महाराणा प्रताप का गौरवशाली इतिहास

सावित्री सिंह परिहार, ज्योति चौबीसा

DOI: https://www.doi.org/10.33545/26646021.2025.v7.i4c.497

परिचय (Introduction)

महाराणा प्रताप भारतीय इतिहास के एक महान योद्धा और शासक थे। उन्होंने अपनी वीरता, दृढ़ संकल्प और स्वाभिमान से लाखों लोगों को प्रेरित किया। आज भी, वे भारत के राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक हैं।1566 में, महाराणा उदय सिंह का निधन हो गया, जिसके बाद प्रताप मेवाड़ के सिंहासन पर बैठे। 1576 में, अकबर ने मेवाड़ पर आक्रमण किया, जिसके परिणामस्वरूप हल्दीघाटी का प्रसिद्ध युद्ध हुआ। इस युद्ध में, प्रताप की सेना भारी संख्या में मुगल सेना से हार गई।हल्दीघाटी की हार के बाद, प्रताप ने गुरिल्ला युद्ध की रणनीति अपनाई। उन्होंने अरावली पहाड़ियों में शरण ली और मुगलों के खिलाफ लगातार छापामार युद्ध छेड़ा। प्रताप ने 25 वर्षों तक संघर्ष जारी रखा और धीरे-धीरे मेवाड़ के खोए हुए क्षेत्रों को पुनः प्राप्त किया।महाराणा प्रताप भारतीय इतिहास के एक वीर योद्धा थे जिन्होंने मुगलों के खिलाफ संघर्ष किया और अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता की रक्षा की। उनकी वीरता, दृढ़ संकल्प और स्वाभिमान आज भी लोगों को प्रेरित करते हैं।

राणा पुंजा जी का जन्म मेरपुर के मुखिया दूदा होलंकी के परिवार में हुआ था।उनकी माता का नाम केहरी बाई था, उनके पिता का देहांत होने के पश्चात 15 वर्ष की अल्पायु में उन्हें मेरपुर का मुखिया बना दिया गया।यह उनकी योग्यता की पहली परीक्षा थी और इस परीक्षा में उत्तीर्ण होकर वे जल्दी ही 'भोमट के राजा' बनगए।अपनी संगठन शक्ति और जनता के प्रति प्यार-दुलार के चलते वे वीर भील नायक बन गए व उनकी ख्याति संपूर्ण मेवाड़ में फैल गई।

इस दौरान 1576 ई. में मेवाड़ में मुगलों का संकट उभरा।इस संकट के काल में महाराणा प्रताप ने भी राणा पुंजा जी का सहयोग मांगा।ऐसे समय में भील मां के वीर पुत्र राणा पुंजा ने मुगलों से मुकाबला करने के लिए मेवाड़ के साथ अपने दल को खड़े रहने का निर्णय किया। महाराणा को वचन दिया कि राणा पुंजा और मेवाड़ के सभी भील भाई मेवाड़ की रक्षा करने को तत्पर हैं।

इस घोषणा के लिए महाराणा ने पुंजा जी को गले लगाया और अपना भाई कहा। 1576 ई. के हल्दीघाटी युद्ध में पुंजा जी ने अपनी सारी ताकत देश की रक्षा के लिए झोंक दी।

हल्दीघाटी के युद्ध के अनिर्णित रहने में गुरिल्ला युद्ध प्रणाली का ही करिश्मा था जिसे पुंजा जी के नेतृत्व में काम में लिया गया। इस युद्ध के बाद कई वर्षों तक मुगलों के आक्रमण को विफल करने में भीलों की शक्ति का अविस्मरणीय योगदान रहा तथा उनके वंश में जन्मे वीर नायक पुंजा जी के इस शौर्य के संदर्भ में ही मेवाड़ के राज चिन्ह में भील प्रतीक अपनाया गया है।

राणा पुंजा जी का जन्म 5 अक्टूबर को भीलों की होलकी (सोलंकी) गोत्र में पिता दूदा होलंकी और माता केहरी के पुत्र के रूप में हुआ। यह सपूत मात्र 13 वर्ष की आयु में मेवाड़ की मेरपुर रियासत की गद्दी पर आसीन हुआ जो आधुनिक गुजरात राज्य की सीमा पर स्थित भील व गरासिया बाहुल्य क्षेत्र है। दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र में संगठनात्मक शक्ति, स्वामी भक्ति, राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता, प्रतिभा और कर्तव्य के प्रति समर्पण को देखते हुए महाराणा उदयसिंह ने उन्हें 'राणा' की उपाधि से सम्मानित किया।

मेवाड़ की पश्चिम भाग में स्थित दुर्गम पहाड़ी रियासत के कम वय में सरदार के रूप में अपनी निष्ठा का निर्वहन करते हुए राणा पुंजा जी ने जनजातियों को एक सेना के रूप में संगठित, प्रशिक्षित और प्रतिबद्ध किया जो सर्वधर्म, संस्कृति और राष्ट्र की रक्षा के लिए वीरोंचित गुणों से सुसज्जित थी। क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति को एक प्राकृतिक किले के रूप में विकसित किया। किसी भी संकट के समय रक्षा के निमित्त क्षेत्र के सभी प्रवेश वाले मार्गों को नियंत्रण में लिया।11-12वीं सदी में इस्लामिक आक्रमणों के कारण भारतवर्ष की उत्तर पश्चिमी सीमा पर राजनीतिक स्थिरता आ गई थी। दिल्ली पर आरंभ में सल्तनत और बाद में मुगलों के कब्जे के कारण दक्षिणी भारत के अभियानों का मार्ग राजस्थान से गुजरता था। इस कारण राजस्थान के अधिकांश राजपूत शासकों को अपने आश्रय में लेकर मुगल बादशाह अकबर मेवाड़ पर कब्जा जमाने की कोशिश कर रहा था। इस कठिन समय में राणा पुंजा जी अपनी भील सेना के साथ महाराणा प्रताप के साथ कंधे से कंधा मिलाकर एक अथक-अंतहीन संघर्ष के लिए खड़े थे।

मेवाड़ की कमान अपने हाथ में लेने के साथ ही कठिन राजनीतिक परिवेश में महाराणा प्रताप ने धर्म, संस्कृति और राष्ट्र की रक्षा के लिए अनवरत संघर्ष का मार्ग चुना। इस दौरान उनके राज्याभिषेक में राणा पुंजा जी अपने वीर सैनिकों सहित कुंभलगढ़ में उपस्थित रहे। मुगलों के संभावित आक्रमण को देखते हुए आगे की रणनीति के लिए राणा पुंजा जी ने अपने उपयोगी सुझाव दिए एवं कार्यों की तैयारी से संबंधित उत्तरदायित्व अपने कंधों पर उठाने का संकल्प लिया। सन् 1576 में हल्दीघाटी के युद्ध में भील पदातियों के साथ राणा पुंजा जी ने तीर-कमान, छोटी तलवारों और गोफन जैसे परंपरागत हथियारों के साथ युद्ध स्थल के दाएं ओर का मोर्चा संभालते हुए दुश्मन के छक्के छुड़ा दिए। इस युद्ध के बाद की क्रमिक घटनाओं में भील सेना द्वारा आविष्कृत छापामार प्रणाली से आक्रमण करते हुए मुगल सेना को भील सैनिकों ने खूब छकाया। रक्त तलाई की लड़ाई में छापामार प्रणाली के बहुत अनुकूल परिणाम रहे। युद्ध काल में हल्दीघाटी के पास मुहाने की पहाड़ी पर महाराणा प्रताप की रक्षा करने का जिम्मा भी इस सेना ने उठाया। एक निश्चित रणनीति के स्थान पर दुर्गम पहाड़ियों में गतिशीलता के साथ आक्रमण करना और पीछे हट जाने की रणनीति ने मेवाड़ी सरदार की शान बढ़ाई। महाराणा प्रताप की राज तिलक स्थली गोगुंदा कस्बे की सुरक्षा और यहां आई मुगल सेना को आक्रामक ढंग से घेरकर सबको चकित कर दिया था। भोमट के क्षेत्र में मुगल सेना के संभावित आक्रमण को देखते हुए सभी दिशाओं में नाकाबंदी का कार्य भील सेना ने संभाला था। संकट के समय में राजकोष की सुरक्षा के साथ ही राजपरिवार की स्त्रियों और

बच्चों की जिम्मेदारी भील सेना को दिया जाना, इस बात का अमिट साक्ष्य है कि मेवाड़ का राजपरिवार जनजातियों के निष्ठावान गुणों का कितना विश्वास करता था। इस संदर्भ में दुर्गम स्थान पर आपात राजधानी के रूप में आवरगढ़ किले की योजना, निर्माण, सुरक्षा और आपात प्रबंध की पूरी व्यवस्था राणा पुंजा जी की भील सेना द्वारा की गई।

"जो दृढ़ राखे धर्म को ताहि राखे करतार..." की नीति पर चलने वाले महाराणा प्रताप ने जब धर्म, संस्कृति और राष्ट्र की रक्षा का जो प्रण लिया तब एक स्वाभाविक राष्ट्र आराधना के निमित्त भीलों ने राणा पुंजा जी के नेतृत्व में मुगलों की विस्तारवादी नीति के विरुद्ध स्वयं को एक अभेद्य जीवंत प्राचीर के रूप में खड़ा कर दिया। छापामार युद्ध प्रणाली द्वारा हल्दीघाटी के युद्ध के उपरांत संकट काल में संचार, कोष और राज परिवार के सदस्यों को सुरक्षा प्रदान करते हुए सबसे महत्वपूर्ण कार्य किए। मेवाड़ की जनजातियों ने सैनिक व संस्कृति रक्षक के रूप में अपने स्वाभाविक कर्तव्यों द्वारा अप्रतिम योगदान दिया जिसके परिणामस्वरूप जग प्रसिद्ध मेवाड़ी संस्कृति में "श्राणी जायो, भीली जायो - भाई भाई" का भाव आज भी लोगों की जुबान पर है। राणा पुंजा जी ने अपनी सेना के साथ वीरोचित कार्यों को मेवाड़ के राज्य चिन्ह को भी जीवंत कर दिया जिसमें एक ओर महाराणा और दूसरी ओर भील सैनिक, सरदार के रूप में प्रदर्शित किया गया है। यह गाथा इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखने योग्य एवं जनमानस के पटल पर अंकित है कि आन बान शान की रक्षा के लिए जनजातियां सदा ही अपने स्वाभाविक धर्म का निर्वहन करते हुए जन इतिहास को युगों युगों के लिए अविस्मरणीय करती है।

अकबर ने प्रताप के साथ बहादुरी से लड़ाई लड़ी। हालाँकि, जब रामप्रसाद का सवार एक तीर से घायल हो गया और गिर गया, तो अकबर का सवार तेजी से रामप्रसाद पर बैठ गया, इस प्रकार उसे पकड़ लिया। बदौनी के अनुसार दोनों पक्षों ने इतनी वीरता से लड़ाई लड़ी कि उन्होंने मानव जीवन के मूल्य को कम कर दिया और सम्मान के मूल्य को बढ़ा दिया।

इस दौरान महाराणा प्रताप और मान सिंह आमने-सामने आ गए। प्रताप ने अपनी सारी सहन शक्ति और कौशल का उपयोग करते हुए अपने घोड़े चेतक को अपनी पिछली टांगों पर खड़ा कर दिया और उस पर हमला करने के लिए मान सिंह के हाथी की सूंड पर चढ़ गए। विभिन्न प्रहारों के बावजूद, चेतक और प्रताप दोनों ने बहादुरी का प्रदर्शन किया और तब तक लड़ते रहे जब तक कि वे पूरी तरह से दुश्मन सेना से घिरे नहीं थे। मुगलों ने झाला मान पर हमला किया जो एक बहादुर लड़ाई के बाद शहीद हो गया था। चेतक पर सवार प्रताप तेजी से भाग गए। उसके बाद दो मुगल सैनिक आए जिन्हें शक्ति सिंह ने रोक लिया और उन्हें नीचे गिरा दिया। बुरी तरह से घायल चेतक हल्दीघाटी से 6 मील दूर स्थित बलीचा गांव पहुंचा लेकिन आगे नहीं जा सका। जबकि प्रताप के वफादार चेतक ने अपनी अंतिम सांस ली, शक्ति सिंह अपने घोड़े पर महाराणा प्रताप की सुरक्षित निकास सुनिश्चित करने के लिए गाँव पहुँचे। चेतक के दुखद निधन के स्थान पर चेतक स्मारक बनाया गया था। जब प्रताप युद्ध से लौटे तो उनकी सेना भी भंग कर दी गई और पहाड़ों पर लौट आए। मुगल सेना की हालत इतनी खराब थी कि वे प्रताप के सैनिकों पर हमला करने की हिम्मत भी नहीं जुटा पा रहे थे।

1576 की लड़ाई के लिए अकबर का इरादा प्रताप और उसके गौरव को पूरी तरह से नष्ट करना था। अकबर का प्रमुख आक्रोश प्रताप का मुगल साम्राज्य से बाहर रहने का संकल्प था। जबकि अकबर मुगल साम्राज्य के तहत मेवाड़ की अधीनता चाहता था, प्रताप स्वतंत्रता और स्वाभिमान के लिए नाश होने के लिए तैयार था।

रामदास मेध्या, झाला बीड़ा, मानसिंह सोंगारा, डोडिया भीम सिंह, चरण और केशव आदि सभी नष्ट हो गए, हालांकि अकबर के खिलाफ इस लड़ाई में प्रताप की बहुत मदद की थी। प्रताप अपने सभी घायल सैनिकों के साथ गोगुन्दा होते हुए कोल्यारी गाँव पहुँचे जहाँ उन्हें चिकित्सा सहायता मिली। दूसरे छोर पर अकबर एक निराश सेना और लापता मुगल वर्चस्व को खोजने के लिए अजमेर पहुंचा।

हल्दीघाटी के युद्ध के बाद भी प्रताप को लगभग एक दशक तक विभिन्न संघर्षों का सामना करना पड़ा। उन्होंने मुगल चौकियों को लूटना और नष्ट करना जारी रखने के लिए खुम्भलगढ़, रणकपुर, चुलिया-इदर, गोदवार के क्षेत्रों, आबू के पहाड़ों आदि की यात्रा की। इस दौरान अकबर ने प्रताप को पकड़ने के कई असफल प्रयास किए। 1582 में विजयदशमी के समय प्रताप ने कुम्भलगढ़ से लगभग 40 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में स्थित देवर गाँव में एक मुगल चौकी पर हमला किया। उस चौकी के प्रमुख सुल्तान खान ने प्रताप के साथ खूनी लड़ाई लड़ी। जब प्रताप के आदमियों ने उस हाथी के पैर काट दिए जिस पर सुल्तान खान सवार था, वह तेजी से घोड़े पर चढ़ गया। उस समय प्रताप के बड़े पुत्र कुंवर अमर सिंह ने अपने भाले के एक कुशल प्रहार से सुल्तान खान और उसके घोड़े दोनों को मार डाला। शेष मुगल सैनिक प्रताप को विजयी बनाकर भाग गए।

महाराणा प्रताप की एतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत के इतिहास में वीरता और राष्ट्रभक्ति की गाथा गाता है एक ऐसा नाम, महाराणा प्रताप.मेवाड़ के शेर के रूप में विख्यात, महाराणा प्रताप का जीवन संघर्ष और त्याग का प्रतीक है।महाराणा प्रताप केवल एक योद्धा ही नहीं थे, अपितु एक आदर्श राजा भी थे.प्रजा के लिये उनका प्रेम और दया भाव प्रसिद्ध था.उन्होंने धर्म और न्याय के लिये संघर्ष किया.

अपने जीवनकाल में भले ही वे मेवाड़ को पूर्ण रूप से मुक्त न करा सके, परन्तु उन्होंने मुगलों के विरुद्ध संघर्ष की अलख जगाई.उनका जीवन हमें यह सीख देता है कि स्वतंत्रता सर्वोपरि है और इसके लिए किसी भी प्रकार का त्याग करने में पीछे नहीं हटना चाहिए.महाराणा प्रताप आज भी भारत के वीर सपूत के रुप में हमारी आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करते रहेंगे.16वीं शताब्दी में मेवाड़ के शासक महाराणा प्रताप सिंह का जन्म राजपूत वंश में हुआ था. मुगल सम्राट अकबर ने मेवाड़ को जीतने के लिए कई प्रयास किए. परन्तु महाराणा प्रताप ने अकबर की अधीनता स्वीकार करने से इनकार कर दिया. चित्तौड़ का दुर्ग खोने के बाद भी उन्होंने हार नहीं मानी. गुरिल्ला युद्ध की रणनीति अपनाकर उन्होंने मुगलों को निरंतर चुनौती देते रहे सन 1576 में हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप ने अकबर की विशाल सेना का मुकाबला किया. भले ही युद्ध में उन्हें पीछे हटना पड़ा, परन्तु उनकी वीरता और शौर्य अद्वितीय था. युद्ध में घायल होने के बाद भी उनकी वफादार घोड़ा चेतक उन्हें सुरक्षित स्थान तक ले गया.युद्ध के बाद महाराणा प्रताप ने वनवास अपना लिया. कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने हार नहीं मानी. भील और अन्य जनजातियों की सहायता से उन्होंने मेवाड़ की स्वतंत्रता के लिए निरंतर संघर्ष किया. उनके सैनिक साहस और रणनीति के कारण मुगलों को मेवाड़ पर पूर्ण अधिकार जमाने में कामयाबी नहीं मिली.महाराणा प्रताप ने ऐश्वर्य और सुख सुविधाओं को त्याग कर स्वाभिमान को सर्वोपरि रखा. उनका जीवन हमें सिखाता है कि कठिनाइयों से कभी घबराना नहीं चाहिए. सत्य और न्याय के लिए हमें सदैव संघर्ष करना चाहिए.महाराणा प्रताप का नाम इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है. उनकी वीरता और त्याग सदियों तक भारत को प्रेरणा देता रहेगा.भारत के इतिहास में वीरता और स्वाभिमान के प्रतीक के रूप में महाराणा प्रताप

का नाम अग्रिम स्थान रखता है। सोलहवीं शताब्दी में मेवाड़ के शेर के रूप में विख्यात, महाराणा प्रताप ने मुगल बादशाह अकबर के विरुद्ध संघर्ष का ध्वज बुलंद रखा।

महाराणा प्रताप का जन्म 1540 ईस्वी में मेवाड़ के राणा उदय सिंह द्वितीय के यहाँ हुआ था। बचपन से ही उनमें वीरता और शौर्य के गुण कूट-कूट कर भरे थे। घुड़सवारी, तलवारबाजी और युद्ध कौशल में उन्हें महारत हासिल थी।मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़ पर मुगलों के आक्रमण के बाद राणा उदय सिंह को गुरिल्ला युद्ध अपनाना पड़ा। इस संघर्षपूर्ण माहौल में महाराणा प्रताप पले-बढ़े। उन्होंने अपने पिता से स्वतंत्रता की ज्वाला को विरासत में लिया।जब अकबर ने मेवाड़ को अधीन करने के लिए बल प्रयोग किया, तब महाराणा प्रताप ने मुगल अधीनता स्वीकार करने से इनकार कर दिया। उन्होंने जंगलों में रहकर गुरिल्ला युद्ध आरंभ किया। 1576 ईस्वी में हल्दीघाटी का युद्ध हुआ, जिसमें महाराणा प्रताप की वीरता और सेनापति की कुशलता पूरे भारत में विख्यात हो गई। यद्यपि युद्ध में उन्हें पराजय का सामना करना पड़ा, किंतु उन्होंने अपना ध्येय नहीं छोड़ा।अपने जीवनकाल में महाराणा प्रताप ने मेवाड़ के अधिकांश खोए हुए प्रदेशों को वापस ले लिया। गौरवशाली इतिहास और वीरता की गाथाओं से उन्होंने जनमानस में स्वतंत्रता की भावना को जगाए रखा। उनकी दरबार में हिंदू और मुस्लिम सरदारों का समान सम्मान हुआ, जिससे राष्ट्रीय एकता का संदेश भी प्रसारित हुआ। महाराणा प्रताप युद्ध कला में ही निपुण नहीं थे, अपितु उनमें उदारता और दयालुता के गुण भी कूट-कूट कर भरे थे। युद्ध में पराजित शत्रुओं के प्रति भी उनका व्यवहार सौहार्दपूर्ण था। महाराणा प्रताप का संपूर्ण जीवन स्वतंत्रता संग्राम को समर्पित रहा। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि सत्ता और वैभव के सामने भी स्वाभिमान और स्वतंत्रता की रक्षा सर्वोपरि है। आज भी महाराणा प्रताप भारत के वीर सपूत के रूप में युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। देवर की लड़ाई के तुरंत बाद, प्रताप खुम्भलगढ़ पहुंचे और अपना शिविर स्थापित किया। यह देखकर सभी मुगल सैनिकों ने किले को छोड़ दिया और प्रताप ने अपना पद पुनः प्राप्त कर लिया। किले में सुरक्षा व्यवस्था करने के बाद, प्रताप जवार की ओर बढ़े, रास्ते में सभी मुगल चौकियों पर कब्जा कर लिया। उन्होंने जवार और छप्पन को पुनः प्राप्त किया और लूना राठौरों के आतंक को नष्ट करके चावंड को पुनः प्राप्त करने के लिए चले गए। इसके बाद, उन्होंने चावंड को विकसित किया और चामुंडा माता मंदिर की नींव के साथ मेवाड़ की नई राजधानी के रूप में तैयार किया। छप्पन क्षेत्र से सटे बांसवाड़ा और डूंगरपुर के दो राज्य थे जिन्होंने अकबर के वर्चस्व को स्वीकार कर लिया था। प्रताप ने इन दोनों राज्यों पर कब्जा करने के लिए रावत भान सारंग देवोत के नेतृत्व में एक सेना भेजी। सोम नदी के तट पर एक युद्ध हुआ जिसने रावत भान को गंभीर रूप से घायल कर दिया, लेकिन इन दोनों राज्यों को अपने अधीन कर लिया। सिरोही के राव सुरतान के साथ कुंवर अमर सिंह की बेटी के गठबंधन ने उनके पुराने झगड़ों को समाप्त कर दिया। इस तरह प्रताप ने धीरे-धीरे अपनी सारी सैन्य और राजनीतिक जोत वापस पा ली।

प्रताप की बढ़ती ताकत एक बार फिर अकबर के लिए चिंता का विषय बन गई। 1584 में अकबर ने एक नई युद्ध रणनीति के साथ, एम्बर के राजा भारमल के छोटे बेटे जगन्नाथ कछवाहा के नेतृत्व में एक सेना भेजी। उस समय प्रताप पहाड़ों में निवास कर रहा था जहाँ अकबर के सैनिक न केवल उसे पकड़ने में असफल रहे बल्कि उसे खोजने में भी असफल रहे। 1585 में अब्दुरहीम खानखाना (मिर्जा खान) अपने परिवार के साथ अजमेर से सिरोही के निकट एक स्थान पर चला गया। एक दिन जब वह शिकार पर जा रहा था, अमर सिंह ने उसके आवास पर हमला किया,

सभी महिलाओं का अपहरण कर लिया और उन्हें अपने साथ पहाड़ों पर ले आया। प्रताप ने इस अधिनियम को अत्यधिक अस्वीकार कर दिया और सभी महिलाओं को उचित सम्मान के साथ मिर्जा खान को वापस कर दिया। मिर्जा इस इशारे से सबसे ज्यादा प्रभावित हुए और सिरोही से चले गए। दूसरी ओर जगन्नाथ कछवाह प्रताप को खोजने और पकड़ने के सभी असफल प्रयासों से निराश होकर भी वापस लौट आए। यह तब था जब अकबर ने अंततः इस तथ्य को स्वीकार कर लिया कि अजेय प्रताप पर हावी होना असंभव है।1586 ईस्वी की शुरुआत तक मेवाड़ पर मुगलों का दबाव कम हो गया था और महाराणा प्रताप ने पहाड़ियों को छोड़ दिया और मेवाड़ की राजधानी चावंड में खुद को स्थापित कर लिया, जहाँ उन्होंने अपने जीवन के अंतिम ग्यारह वर्ष शांति पूर्वक बिताए। इस अवधि के दौरान कोई भी मुगल सेना मेवाड़ नहीं भेजी गई थी, इस प्रकार यह निर्बाध शांति का काल था। प्रताप ने इस समय का लाभ उठाया और विकास पर ध्यान केंद्रित किया। महलों, अस्तबलों और सार्वजनिक सभा स्थल के निर्माण, सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व के स्थानों पर मजबूत सशस्त्र बलों की प्रतिनियुक्ति, कृषि, प्रशासन, जीर्णोद्धार कार्य सभी ने मेवाड़ का सर्वांगीण विकास किया। अमर सिंह की जीत ने महाराणा प्रताप को नई ताकत दी और साथ में पिता-पुत्र की जोड़ी ने मुगलों को चुनौती दी, उदयपुर, गोगुंडा, मोही और मदारिया सहित विभिन्न शेष क्षेत्रों को पुनः प्राप्त किया। अमर सिंह ने प्रताप के साथ कई युद्ध लड़े और विभिन्न सैन्य अभियानों में असाधारण कौशल का प्रदर्शन करते हुए अपार अनुभव प्राप्त किया। अपने आत्मविश्वास के चरम पर होने के कारण वह एक बार में पांच मुगल क्षेत्रों पर कब्जा करने में सक्षम था। 1588 ईस्वी तक छत्तीस मुगल चौकियों के साथ-साथ जहांजपुर क्षेत्र पर मेवाड़ ने कब्जा कर लिया था। अकबर लाहौर में था जब प्रताप की अंतहीन जीत की खबर उसके पास पहुंची। हालाँकि, इस समय तक मेवाड़-मुगल युद्ध की संभावना लगभग समाप्त हो चुकी थी। 1597 में, महाराणा प्रताप एक शिकार अभियान के दौरान गंभीर रूप से घायल हो गए जिससे उनका स्वास्थ्य तेजी से बिगड़ गया। उनके आने वाले निधन के अंतर्ज्ञान ने उन्हें इस डर से जकड़ लिया कि उनका बड़ा बेटा, उनके निधन के बाद मुगल वर्चस्व को स्वीकार कर सकता है और यह उनकी प्रमुख चिंता बन गई।

इस चिंता से परेशान उनके बेटे और उत्तराधिकारी अमर सिंह ने अपने सरदारों की गवाही में अपनी अंतिम सांस तक मुगलों की गुलामी को स्वीकार नहीं करने की कसम खाई। इस आश्वासन ने प्रताप को शांति प्रदान की और 19 जनवरी, 1597 सीई को चावंड में सत्तावन वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई। मेवाड़ के इस महान योद्धा ने अपने पीछे अजेय संघर्ष की विरासत छोड़ दी, जो अंततः सूर्य की तेज रोशनी में गायब हो गई हे प्रताप! आपने युद्ध के घोड़ों को कभी भी शाही सेना में नहीं भेज कर अमर कर दिया है (शाही सेना में घोड़ों को एक स्थान के साथ चिह्नित किया गया था), आपने कभी किसी के सामने अपना सिर नहीं झुकाया। राजस्थान की लोकगीत आपकी वीरता गाती है और आपको असली नायक के रूप में गौरवान्वित करती है, आप अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए डटे रहे और पूरी जिम्मेदारी अपने मजबूत कंधों पर उठाई। मेवाड़ की धरती आपकी वीरता, स्वाभिमान और एक ऐसे महामानव के साहस से प्रतिध्वनित होती है, जो आप थे। इसलिए हे प्रताप! आपकी मृत्यु पर, अकबर ने अपनी जीभ काट ली और दुःख की एक आह निकाली, उसकी आँखों में आँसू भर आए, क्योंकि अपने दिल की गहराई में वह हमेशा इस तथ्य पर पछताता था कि एक बहादुर गुहलोथ था।महाराणा प्रताप का दाह संस्कार करीब ढाई किलोमीटर दूर भंडोली गांव के पास एक नदी के

किनारे हुआ। चावंड से उनकी पत्नियों राठौर माधो कंवर और रण कंवर ने शिरकत की, (एक पूर्व हिंदू प्रथा जहाँ एक विधवा ने अपने पति की चिता पर आत्मदाह कर लिया)। श्मशान स्थल पर अमर सिंह द्वारा एक कब्रगाह का निर्माण किया गया था, जो आज तक उस क्षेत्र और उसके आसपास लोगों के लिए श्रद्धांजलि का पवित्र स्थान बना हुआ है।

शारीरिक रूप से महाराणा प्रताप का भव्य और चुंबकीय व्यक्तित्व कई गुणों का मेल था। वह एक गोरा रंग, बड़ी आँखें, हैंडलबार मूंछें, पारंपरिक गोल चेहरा, अच्छी तरह से निर्मित शरीर और चैड़े कंधों वाला लंबा था। वे स्वभाव से दयालु, स्वतंत्रता प्रेमी, देशभक्ति और स्वतंत्रता के प्रवर्तक, वीर और साहसी, कुशल योद्धा, कट्टर विरोधी, उत्तम प्रशासक, सतर्क विचारक और अडिग आत्मविश्वास से भरे हुए थे।

निष्कर्ष

महाराणा प्रताप को अपने पिता उदय सिंह की तुलना में बहुत कमजोर, कुपोषित और छोटा राज्य विरासत में मिला। इसलिए अकबर के मजबूत, अमीर और फैले हुए साम्राज्य से लड़ना एक सच्ची चुनौती थी। स्वतंत्रता और स्वाभिमान के प्रेमी महाराणा प्रताप ने इस चुनौती को अत्यंत क्षमता और आत्मविश्वास के साथ स्वीकार किया। जब महाराणा प्रताप अपने भविष्य के देश के ऐतिहासिक क्षितिज की ओर देख रहे थे, भारत की धरती अपने भविष्य के उद्धारकर्ता की तलाश में थी। ठीक इसी समय महान महाराणा प्रताप के रूप में निराशा और हताशा के काले बादलों को छोड़ने के लिए एक प्रकाश का जन्म हुआ। उन्होंने अपने अजेय चरित्र से इन काले समय को चुनौती दी और स्वतंत्रता, स्वतंत्रता और स्वाभिमान की अवधारणाओं के पर्याय बन गए। उन्होंने मेवाड़ के छोटे-छोटे पत्थरों में जान फूंक दी और यहां की जनता में स्वतंत्रता और स्वाभिमान के गुण पैदा कर दिए। उसने उन्हें विश्वास दिलाया कि वे तूफानों के सबसे मजबूत तूफान में भी प्रयास, अनुग्रह और संघर्ष की रोशनी को जलाए रख सकते हैं। जहां मुगलों की विस्तारवादी नीति निर्मम और क्रूर थी, वहीं प्रताप का प्रतिशोध भी उतना ही मजबूत लेकिन गौरवशाली था। इसलिए उन्होंने आजादी और आजादी की इस महान लड़ाई में अपनी आखिरी सांस और खून की आखिरी बूंद तक बहादुरी से लड़ाई लड़ी। उन्होंने अपना पूरा जीवन मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए संघर्ष करते हुए बिताया और अपने परिवार और राष्ट्र के गौरव की अंतहीन रक्षा की। हकीम खान सूर, ग्वालियर के राजा रामशाह तंवर, झाला मान, भामाशाह आदि प्रताप से प्रेरित थे और जीवन के सभी सुखों और भौतिक सुखों को त्याग कर महानता के अतुलनीय उदाहरण प्रस्तुत किए।

संदर्भ

महाराणा प्रताप - हल्दीघाटी के नायक, केसरी सिंह द्वारा, पृष्ठ ख् 9, बुक्स ट्रेजर, जोधपुर

- अमर - काव्यवंशावली ध्रावतराणा जी री बट, पृ. ख् 102,

- टॉड एनल्स ऑफ मेवाड़, कर्नल जेम्स टॉड द्वारा, रूपा एंटिक्विटीज

- रावल राणा जी री बट, पृ. ख् 102,

- मेवाड़ का इतिहास रूराम वल्लभ सोमानी द्वारा प्रारंभिक काल से 1751 ईस्वी तक, पृष्ठ। ख् 219, सी.एल. रांका एंड कंपनी, किताब महल, जयपुर

1. महाराणा प्रताप - हल्दीघाटी के नायक, केसरी सिंह द्वारा, पृष्ठ ख् 10, बुक्स ट्रेजर, जोधपुर, प्ैठछ
2. 978-81-900422-4-0
3. राजप्रशस्ति, स्नातकोत्तर ख् कैंटो 4, वीवी, 32,
4. एमएस। अमर काव्यवंशावली, स्नातकोत्तर ख् फोलियो य 45 (बी),

5. मेवाड़ और मुगल सम्राट, जी. एन शर्मा द्वारा, पृष्ठ ख् 115, शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी लिमिटेड, आगरा
6. एमएस। वंशावली, स्नातकोत्तर ख् फोलियो 73 (ए),
7. हाउ महाराणा प्रताप ने रहीम को बनाया रूए स्टोरी, ट्रू इंडोलॉजी द्वारा, ट्रू इंडोलॉजी ओर्ग
8. महाराणा प्रताप, महाराणा प्रताप संग्रहालय द्वारा, पृ. ख् देवर युद्ध (1582), महाराणा प्रताप संग्रहालय, हल्दीघाटी
9. प्रताप का इतिहास, प्रताप गौरव केंद्र राष्ट्रीय तीर्थ द्वारा, चतंजं च हंन तं आमद कतं.वतह
10. राजस्थान के इतिहास और पुरावशेष, कर्नल जेम्स टॉड द्वारा, रूपा एंटिक्विटीज
11. प्रताप गौरव केंद्र राष्ट्रीय तीर्थ - होम पेज, प्रताप गौरव केंद्र द्वारा, चतंजं च हंन तं आमद कतं.वतह
12. भागवत ने प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया, बिजनेस स्टैंडर्ड द्वारा उदयपुर में महाराणा प्रताप गौरव केंद्र का उद्घाटन किया
13. रदमल होत्रा और रचना पारुलकर की श महाराणा प्रताप श के दो साल पूरे श। समाचार 18. 16 अक्टूबर 2019 को लिया गया।
14. भारत का वीर पुत्र - महाराणा प्रताप - टाइम्स ऑफ इंडिया। 17 अप्रैल 2022 को लिया गया।
15. अजाके, ए। (2012)। क्रॉस रिवर स्टेट, नाइजीरिया के आर्थिक विकास के लिए पर्यटन की प्रासंगिकता। जर्नल ऑफ ज्योग्राफी एंड रीजनल प्लानिंग, 5(1), 14 - 20। जज चे रूध्क वप.वतहध् 10.5897 ध्श्रळत्च् 11.122
16. अमोआ, वी. ए., और बॉम, टी. (1997)। पर्यटन शैक्षिक नीति बनाम अभ्यास। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ समकालीन आतिथ्य प्रबंधन, 9(1), 5 - 12। ईजज चे रूध्क वप.वतहध् 10.1108 ध् 09596119710157531
17. आर्य, पी. (2019). के विभिन्न पर्यटन का संक्षिप्त अध्ययन राजस्थान रू एक समीक्षा। 9(2249), 5.
18. डेल, सी., और रॉबिन्सन, एन। (2001)। पर्यटन की थीम शैक्षिक रू एक तीन - डोमेन दृष्टिकोण। अंतरराष्ट्रीय समकालीन आतिथ्य प्रबंधन जर्नल, 13(1), 30 - 35. ईजज चे रूध्क वप.वतहध् 10.1108 ध् 09596110110365616
19. थ्पकहम वद, पीआर (2010)। पर्यटन शैक्षिक और पाठ्यक्रम डिजाइन रू समेकन के लिए एक समय और समीक्षा? पर्यटन प्रबंधन, 31(6), 699 - 723। ईजज चे रूध्क वप.वतहध् 10.1016 ध्र.जवनतउंद.2010.05.019